वह जीवन स्वीकार नहीं है

चाहे संग चले पुरवाई
चाहे चरण रहे अमराई
जिस जीवन में संग नहीं तू
वह जीवन स्वीकार नहीं है।
जाने कितने दीप जलाएँ
दो नयन अँधेरी रातों में
माँगें होकर देव उपासी

नित भजन मंत्र अरु बातों में
नाम नहीं जिस जप में तेरा
हाथ नहीं जिस तप में तेरा
हो कितना भी मंगलदायी
वह अचज़्न स्वीकार नहीं है ।

गाती थकती है कब धड़कन
उज्ज्वल गाथा केशर तन की
कब छोड़ी हैं सुरभित उंगली
श्वेत कमल से निमज़्ल मन की
चाहे रूप कलश ढुलकाए

चाहे घूँघट चन्द्र दिखाए
करे न मुझमें बिंबित तुझको
वह दपज़्ण स्वीकार नहीं है।
हर एक लता खुशियों वाली
है हरी भरी नेहिल जल से

रुके हुए हैं हंस मनोहर
देह- झील में तेरे बल से
महक नहीं हो जिसमें तेरी
चहक नहीं हो जिसमें मेरी
हो कितना भी पुष्प परागी
वह उपवन
स्वीकार नहीं है ।

अशोक दीप
जयपुर

तनि धारो धीर हे मैया .

(श्रीराम कौशल्या सम्वाद)
तनि धारो धीर हे मैया,
बन से लौटि चरन सिरु धारौं ।
बन में होहिं मोही कल्याना,
दशज़्न पाउँ मुनीजन नाना,

तिन्ह की कृपा असुर संहारौं ।
बन से लौटि चरन सिरु धारौं ।
तनि धारो धीर हे मैया.........
चौदह बरस तेरी किरपा से,

कटि जैहैं दिन सुख सुविधा से,
ग्लानि नहीं हिय धारौ ।
बन से लौटि चरन सिरु धारौं ।
तनि धारो धीर हे मैया.........

विदा देहु मैया मोहे बन को,
लौटि दरश करूँ तेरे चरन को,
बिनती मोर स्वीकारौ ।
बन से लौटि चरन सिरु धारौं ।
तनि धारो धीर हे मैया.........

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर, बिहार

वीरांगना

तेजमय ओजमय सुंदर
कांति मय सूरत
धैर्य वान शौर्य वान
शूरवीरता की मूरत

तेज कांति सुंदरता की
सूरत जिसने पाई
साहस शौर्य पराक्रम
वीरता की मूरत कहलाई

बल रखे रानी लक्ष्मी सा
जो दुश्मन के होश उड़ा जावे
आन रखे तो पद्मावती सी
जो हाथ चीर ना लग पावे

भारत देश के भाग बड़े
जो ऐसी वीरांगना को पाया
हाडा रानी ने तो युद्ध में वर को
शीश काट कर भिजवाया

पन्नाधाय सा त्याग कहा
बलि हेतु अपना शिशु सुलाए
राजदुलारे के प्राण बचाकर
राष्ट्र भक्ति निभाए

रानी दुर्गावती सी योद्धा कहा
जो युद्ध में कला दिखावे
अहिल्याबाई सी माता कहा
जो शिवाजी को योग्य बनावे

डॉ. प्रियंका शर्मा प्रिया
उदयपुर (राजस्थान

पुरवा के दीवाने

हालत -ए - पुरवा क्या हो गई हे यारा ,
जिधर देखो उधर गलियां तंग हो गई हे यारा
हर घर के आँगन में कभी
ओटले हुआ करता थे ,
आज वहा दुकाने तन गई हे यारा !
पुरवा की फिज़ाओ में कभी
बचपन आज़ाद खेलता था,
आज लोहे के पिंज़रो में केद
बचपन को सिकुड़ते देखा गया हे यारा !
कभी तालीम के लिये एक ही स्कूल था,
आज इस की भी दुकानें दजज़्न में हें यारा
मयखाना कभी देखा तक नहीं था पुरवा ने,
आज हर गली में इसकी ही बू आती हे यारा
कभी पुरवा के दीवाने की
हम भी पहचान हुआ करते थे,
हमारी प्रेम कथाओं के किस्सों का
हर गली हर ओटला गवाह था यारा
बेवफा सी शहरी आबोहवा ने
आज हम दोनों के असीम प्रेम की
पहचान को मिटा दिया
गया हे यारा !!

– **अरविन्द रावल**

गजल

प्यार उसकी रही नजाकत है।
जीत कर भी उसे न राहत है।
हफ़्र पढ़ती रही छुपा मन में,
खून से मैं लिखा वही खत है।
अन्त होता नही कभी फन का,
प्यार फनकार की इबादत है।
एक जो लब्ज था वही अंतिम,
पास मेरे वही अमानत हैं।
रूह मेरी फना हुई लेकिन,
आज भी खोजती ये जन्नत है।

हरिहर राय ' चौहान '

खड़ंगाझार, टेल्को, जमशेदपुर .

श्री गणेश वंदना

दशज़्न दो प्रभु गणेश मेरे।
मैं आया हूं शरण तेरे।।
मेरे स्वामी विध्न विनाशक।
मैं हूं तेरा ही एक बालक।।
निश दिन तेरे गीत गाऊ।
खुश हो तुझे नृत्य दिखाऊ।।
तुम ही हो सखा मीत मेरे....
दया करें अब मेरे स्वामी।
घट घट वासी ऐ अंतयामज़ी।।
रिद्धि सिद्धि के तुम विधाता।
सकल सुखों के तुम प्रदाता।।
दूर करों दुख ददज़् मेरे........
प्रथम पूज्य आप कहाते।
हर रीत में प्रथम मनाते।।
पाप दोष सारे हर लेना।
भूल चूक क्षमा कर देना।।
हरदम गाता गीत तेरे.......
हाथ जोड़कर द्वार खड़ा मैं।
चाहु आशीष शरण पड़ा मैं।।
मैं मनहर चरणों का चाकर।
हाथ पकड़ों हाथ बढ़ा कर।।
दशज़्न पाऊं सांझ सवेरे......

मनोहर सिंह चौहान मधुकर

ऐ ज़िन्दगी

ज़िन्दिगी के किताब से
अतीत के पन्नों को
फाड़ देना चाहिए
कल क्या था ,
कल क्या हुआ
ऐ ज़िन्दिगी ,
हमें भूल जाना चाहिए
मन में उमड़ते सवालों को
कुछ अतरंगी ,
कुछ रंगङ्बिरंगे ख़्यालों को
कागज़ पर छाप ,
मैं की खोज वाली यात्राओं में
हमें खो जाना चाहिए
कल क्या था ,
कल क्या हुआ
ऐ ज़िन्दिगी , हमें भूल जाना चाहिए

तनु

श्री गणेश जी के हाइकु

(प्रसंग - श्री गणेश चतुथीज़)
प्रथम पूज्य
सब देवताओं में
हे ! गणराज।
अभिनंदन
रिद्धि - सिद्धि सहित
हे ! शिव पुत्र ।
क्लेश हरने
पधारिए घर में
हे ! विघ्नहताज़।
दूर कर दो
मन की मलीनता
हे ! बुद्धिदाता ।
सुख - शांति का
दीजिए वरदान
हे ! गौरी सुत ।
खाली न रहे
प्राणिमात्र का पेट
हे ! लंबोदर। कर दो पूरीसबकी कामनाएं
हे ! गजानन।

मोहन जोशी ' पीयूष 'इंदौर

।। डोली ।। बहर में।।

हो रही हो विदा, खुदा हाफ़ज़ि।
हो तुम्हारा भला, खुदा हाफ़ज़ि।।
तेरे बाबुल की है, दुआ बेटी।
दुर सब हो बला, खुदा हाफ़ज़ि।।
तेरी किस्मत में हो , खुशी हर दम।
सब की है ये दुआ, खुदा हाफ़ज़ि।।
याद रखना नबी की, सुन्नत को।
होगा हर दम भला, खुदा हाफ़ज़ि।।
अलविदा कह रही, है गुलशन से।
ये मेहकती फिज़ा, खुदा हाफ़ज़ि।।
ये ही अकरम की है, दुआ दिल से।
साथ तेरे खुदा,, खुदा हाफ़ज़ि।।

।। अकरम शिरानी रतलाम।।

क्या कहें किस से कहें...

बोझ से रिश्ते हैं दिल पे भार है।
चैन से जीना बहुत दुश्वार है।।
घर के अंदर साँप सीढ़ी का है खेल।
इक चढ़ाता दूसरा देता धकेल।।
सीढ़ियों साँपों में भी गठजोड़ है।
राह में दो-चार पग पर मोड़ है।।
दिन में अमृत रात वो लगता गरल।
हर पहेली नित्य हो जाती सरल।।
ग्रंथियों का विष उजागर हो रहा।
कष्ट जो नाला था सागर हो रहा।।
छिद्र छल के सामने आने लगे।
गाते-गाते स्वप्न चिल्लाने लगे।।
दोगलापन सोच पर हावी हुआ।
आज जैसा कष्टप्रद भावी हुआ।।
धूप अमराई में आने लग गई।
अपनी परछाई डराने लग गई।।
एक उपवन आज दंडक वन हुआ।
तन विकल था आज भारी मन हुआ।।
मंथरा के मुख कुटिल मुस्कान है।
फिर से होने को अवध वीरान है।।
मूल्य, नैतिकता न कोई लाज है।
जितना विकृत कल नहीं था आज है।।
रक्त-रंजित आस्था की देह है।
छटपटाता दम्भ नीचे नेह है।।
काहे का घर एक कारागार है।
छत के नीचे मौन हर दीवार है।।
हर कोई विष-बेल देखो बो रहा।
क्या कहें किससे कहें क्या हो रहा??

प्रणय प्रभात
श्योपुर (मप्र)

संजीवनी

बस्तर की कोयल रोई क्यों।
संनसनाते पेड़,
झुरझुरती टहनियां
घने कुंवारे जंगल

वृक्ष पेड़ और लताएँ,
घने कुंवारे जंगल
टहनियां और जड़ें
सब जड हैं,
शांत है सब के सब,

पेडों की आपस में
बातचीत बंद है,
पत्तियों की फुसफुसाहट
भी शायद,

चिड़ियों की चहचहाहट
कौओं की कांव-कांव
मुगेज़ की बांग
शेर की पदचाप

बंदरों की उछल कूद
हीरणीयों की चपलता
कोयल की कुह कुह
मौन है सब मौन है,
आदि बालाओं का प्रेम नृत्य,
महुए से पकती मस्त जिंदगी,

लांदा पकाती आदी बालाएं,
पवित्र मासूम प्रेम का घोटुल,
आदिवासियों का भोलापन
मुस्कान चेहरे की हरीतिमा

कहां गायब है सब।
केवल बारूद की गंध
पेड़ पत्तियां टहनियां
सब के सब बारूद के

बारूद से बारूद के लिए,
मशीनों की तडटहाहट
भारी कदमों की अनुभूति,
एक बेहद खामोश
भयानक बारूदी धमाका,

काल कवलित
जवानों के शरीर,
हाय ?
पेड़ों पर फूलों की तरह
लटके मांस के लोथड़े,
पत्तियों की जगह तमगे

तनो पर चिपकी वदिज़्यां,
सस्ती जिंदगी
अनजान पर न्योछावर,
आज कोयल रोई,
अपनी कूह कूह पर,
अपनी कोयल होने पर,
बस्तर की कोयल होने पर।
फिर बस्तर की
कोयल रोई क्यों?

संजीव ठाकुर, रायपुर छत्तीसगढ़,

गद्दी संस्कृति महान

भूलणा लगै अपणी संस्कृति,
ते होरी सस्कृति तै करदें प्यार,
अपणी भाषा जो बलणा,
करदै न जरा स्वीकार,
ऐ किना युवा भुची गो हा तैयार।
गद्दी बलणै री सरमा लगदी,
ते होरी संस्कृति तै करदै प्यार,
ऐ किना युवा भुची गोहा तैयार।
हल्कै बच्चे जो भी,गद्दी न सखदै,
सोचदैं, गद्दी बल्ली करी कै भूणा,
हिंदी बल्ली करी लगणा महान।
पहनावे री ता पुच्छा मत,
छड़ी दितै मणुएँ गादै लाण,
चोलू, लुआचड़ी लदै ना,
कमीजा-जींसा रा करदै बखाण।
कबरी कोट लाणा छड़ी दित्तै,
मणुए दौडू, पट्टू रे पलोड़,
पाणा भी छडी दितै।
करा कुछ,ना तां गायब भुची गाणै,
इदैं ऐ गादै लाण,
तै गायब भुची गाणी इन्दी,
ऐ गादी पहचाण।
ऐ गल्ल इठइऐ ना मुकदी,
ऐ दिला हा दुखन्दी।
इन्दे गादै गीत मणुओ खरै ना लगदै,
तै पंजाबी गीता पुर डीजै आ थिरकदै।
अगर ऐ ही हालत रही,
तां मिटी गाणा इदी संस्कृति रा ना नशाण,
तै मिटी गाणी इदीं ऐ गादी पहचाण।
जे बचाणा ऐहा ओ,
तां असु सभी जो जुटणा पैणा,
तै करना पेणा ऐ प्रयास,कि बची रेआ,
इंदी गद्दी संस्कृति महान।

अपिज़्त गौतम
चाचियाँ खास पालमपुर, कांगड़ा हिप्र

गणपति बप्पा

आई चौथ गणेश की, सजे सभी घर-द्वार ।
घर-घर में विराज रहे, जग के तारनहार ।।
जग के तारनहार, भोग लड्डू का भाये ।
रिद्धि-सिद्धि के संग, गजानन घर पर आये ।।
लम्बोदर गजकण, रूप छवि सबको भाई ।
खुशियाँ लिए अपार, गणेश चतुथीज़ आई ।।
गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूरति रूप ।
विघ्नहरण मंगल करण, तुम ही जग के भूप ।।
तुम ही जग के भूप, बुद्धि के तुम ही दाता ।
जीवन में अनुराग, मनुज तुमसे ही पाता ।।
रहे तुम्हारा हाथ, भक्त की रहे न अवगति ।
जन-जन का विश्वास, राह दिखलायें गणपति ।।

डॉ. राजेन्द्र कुमार अवस्थी
रोहतक

गज़ल

कहाँ से लाऊँ ढूँढकर अपनों के लिए विश्वास,
दुनिया से मैं कह सकूँ मेरा दिल हरपल साफ
संग -संग जीवन जिया, सुख-दुःख काटे साथ,
फिर गफ़लत में रह कर क्यों मेरे हुए खिलाफ।
रखो न पाल नफरत मन में, औरों का देखो हाल,
टूट-टूट न जीवन बिखरे हैं कर देते प्रभु माफ
आओ मिल गलबहियाँ लें, बोये स्नेह की पौधा
,खुशी हमेशा साथ चलेगी, प्रकृति करती इंसाफ
जो खुद पर विश्वास रख , करते निश्छल कमज़,
उनको कुदरत भी देती शिव' जीवन भरका लाफ

शिवनन्दन सिंह
बिरसा नगर, जमशेदपुर, झारखंड।

गणपति महिमा

गणपति जी की महिमा न्यारी है
गजानन की शक्ति निराली है
तुम ही करूणा के सागर हो
तुम ही लंबोदर अपार हो

तुम ही जग के पालनहार हो
तुम ही जग की नैय्या पार हो
गोरी सुत तेरी लीला न्यारी है

लड्डू के सब भोग लगाएं
सबसे प्रथम तुम्हें मनाएं
मूषक की तुम्हारी सवारी
तुम हो देवा सब पर भारी
जग के कष्टों के हरता हो
तुम ही भाग्य विधाता हो

पीतांबर वस्त्र किए धारण
शांत मन सा अचारण
तेरे चरणों में मेरा सब कुछ अपिज़्त
मेरी जिंदगी का सब कुछ करूं
समपिज़्त

माता पिता के तुम सच्चे सेवक
तुम्हें सब से प्यारे हैं मोदक
हाथ जोड़ कर में करूं विनती
मेरे घर आंगन में पधारों गणपति
गणपति बप्पा की लीला न्यारी
गजानन की शक्ति
बड़ी निराली

सुनील गौर
इंदौर मध्यप्रदेश

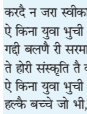

उजाड़ दिए आशियाने

हवा ने -
उजाड़ दिए आशियाने ।
पंछियों को -
इसी बात का ग़म है ।
उजड़े नीड़ -
बारिश का मौसम है ।
पानी ने -
फाड़ दिए शामियाने ।
बिखरा पड़ा -
घर का सभी सामान ।
नीचे ज़मीं -
ऊपर है आसमान ।
दफ्न हो -
स्वप्न हुए ताज़यिाने ।
आंखों में -
अश्क़ों के हैं ठिकाने ।
रूमाल रहे न -
जाने - पहचाने ।
बचे हैं हाथ -
केवल आज़माने ।
पेड़ भी हुए -
आंधियों के ख़िलाफ़।
आसमान भी -
दिल का रहा न साफ़।
हवा ही -
अब शेष है दरमियाने ।

अशोक आनन
मक्सी

मैं जीवन रस

पी रहा हूं
मैं आंसुओं को
गीत बना रहा हूं
मैं नदी नदी को
मिला कर
तीथज़ बना रहा हूं
मैं नये नये
पेड़ों के बीज
बो रहा हूं
मैं हवा में
प्रेम की पताका
फहरा रहा हूं

-दुगाज़्प्रसाद झाला

रजधानी प्रवास

छालो वाले तलवे देखे,
रजधानी के जलवे देखे,
देखे लम्बे-चौड़े रस्ते,
उन रस्तो पर बलवे देखे,
देखा अपने गाँव का गोबर,
रजधानी में दिखता सोबर,
दौरों पर सब मंत्री देखे,
राम भरोसे संत्री देखे,
आदेशों का जोर देखा,
अमल बडा कमजोर देखा,
कुसीज़ की मनमानी देखी,
अफसर को मुँहजोर देखा,
कुछ उद्यान, बगीचे देखे,
हरे-भरे और सींचे देखे,
थके-थके से पाँव देखे,
दाँव पे लगते गाँव देखे

राजू काले
मंडलेश्वर पश्चिम निमाड़ (म.प्र.)

क्षणिकाएं

अवतरित
नेता बनने के लिए
उन्होंने कई पापड़ बेले
कई राजनैतिक खेल भी खेले

फिर भी हार न मानते हुए
अपने प्रयास में अड़े रहे
तब कहीं जाकर वे
राजनीति में अवतरित हुये
कछुआ चाल

रिश्वत अगर मिली नहीं
फाइलें कछुआ चाल चलती हैं
कई महीनों बाद
उनकी धूल हटती हैं
खास हथियार
संसद में बैठकर
एक दूजे को दोष देना
आदत में शुमार हैं

आजकल सांसदों का
यही खास हथियार हैं
वोट जीवि
जब भी नेता वोटों की
भीख मांगने आते हैं

वोट जीवि कहलाते हैं
जानवरों से प्रेम
आजकल इंसान इंसान से नहीं
जानवरों से प्यार करने लगा हैं
इसलिए अपने घरों में
कुत्ते पालने लगा हैं

रमेश मनोहरा
जावरा (म.प्र.)

गणपति बप्पा मौरया

लोकलाज शमज़ हया घर-घर नाच रही है
टीवी के पदेज़ पर कठपुतलीया़ नाच रही है
भूल गए हैं वेद पुराण बाइबल
कुरान और गीता के संदेशों को
समूचे विश्व में हाहाकार मच रहा है
ब्रह्मा विष्णु से सृष्टि चल रही है
ऐसा लग रहा है कौरव पांडव का युद्ध चल रहा है
क्या अब फिर कान्हा आएंगे
सुदशज़्न चक्र चलाएंगे या हनुमान जी
पवज़्तों को उठाएंगे
अब आ गए हैं गणपति बप्पा मौरया
यही भगवान गणेश जी विघ्नहताज़ है
फिर बजेंगे ढोल ताशे घर-घर होगी
पूजा अचज़्ना अब कहीं कोई विघ्न
ना होगी भूल जाओ जात-पात
की लड़ाई को अब तुरही और शंख
बजने वाले हैं घुल मिल जाओ

गणपति जी की लीला में
बहादुर अली

वैरी भी घर पर आ जाए, कटुता तज कर सत्कार करो।
हितकारी बात कहो मुख से, संवाद सधा उपचार करो।।
यह मन अपना निश्छल रखना, गुणगान करेगा जग सारा।
मीठी वाणी से मीत बने, मैत्री का झरना रस धारा।।
पर पीड़ा में आँसू निकले, संवेदक बन उपकार करो।
वैरी भी घर पर आ जाए, कटुता तज कर सत्कार करो।।
मानवता की सीख यही है,सब जीवों पर करुणा रखना।
भावों से भी होती हिंसा, शब्दों के स्वाद सदा चखना।।
रिश्तों का उपवन यूँ महके, जन-जन से नित सहकार करो।
वैरी भी घर आ जाए, कटुता तज कर सत्कार करो।।
युग-युग से मुरझे सपनों को, नव-जीवन नव-पथ गान मिले।
दीवारों पर है मायूसी, मरहम बनकर मुस्कान खिले।।
अंतस का दीपक हो झिलमिल, उजियारे का विस्तार करो।
वैरीभी घर पर आ जाए, कटुता तज कर सत्कार करो।।

पंकज परिधि धींग
नीमच (मप्र.)

अलग होती है लड़को की दुनियां लड़कियों से,
बचपन से ही इन को मजबूत बनाया जाता है।
मदज़् को कभी ददज़् नही होता यही सिखाया जाता है।।

चोट भी लगे तो यह रोते नही है
क्योंकि यह लडके है यह नाजुक नही होते है।

बहन छोटी हो या बड़ी जब भाई के साथ होती है।
खुद को महफूज़ महसूस वो करती है।

दिल मदोज़्ं को औरत से ज्यादा कोमल होता है।
मदज़् कभी माँ,बहन या बीवी को रोते नही देख पाता।

कभी नम हो जाये आँख बहन की तो,
झूठी बातों से उस को हँसाता है ।
यह बात और है कि यह सच वो छिपाता है।

घर में खुशहाली आये इसलिए चट्टान को भी तोड़ लाता है।
यह मदज़् ही है जो घर का सारा खचज़् चलाता है।

जेब फ्टी हो तो रूखी रोटी आचार से खाता है।
पर बच्चों के लिए टॉफी जरूर लाता है।।

हो ऑफिस या व्यापार में कितनी भी दिक्कत ,
शाम को हँसता हुआ घर आता है ।

बच्चे उदास न हो जाये पापा को उदास देख कर,
इसलिए सारी परेशानी छिपाता है।

माँ की साड़ी,बीवी की चूड़ी और बहन की चुनरी लाने को।
कड़ी धूप में भी हसँ कर काम पर जाता है।
शाम को कुछ न कुछ ले कर ही घर आता
है।

मदज़् के ही मजबूत कंधे होते है
जो बहन को डोली में विदा करते है
और माँ को चिता पर विदा करते है।।

सब की ख्वाहिश पूरी करने में वो अपनी इच्छा भूल जाते है।
जहाँ औरतें खुद पर इतना खचज़् करती है शादियों में।
यह शेरवानी पहन कर ही शहजादे बन जाते है।

यू ही नही खुदा ने इन को लड़कियों से अलग बनाया है
वो जानता था कि इन की ताकत बिना यह दुनीयाँ अधूरी है।

यह दुनियाँ लड़कों से ही पूरी है।
घर की शान होते है बेटे ,
बाप का सहारा तो माँ के लिए वरदान होते है बेटे।
मन्नतों के धागे और बुजुगोज़्ं के आशीष होते है बेटे।।

संध्या चतुवेदज़ी मथुरा,उप

जुबान की मिठास

जिनकी वाणी में होती है मिठास
रहेंगे लोग उस के आस पास
जिनके होंगे कड़वे तीखे बोल
उसको बोलना होगा तो
ल मोल के बोल
आपकी मीठी वाणी करती सबको प्रभावित
मिलती है सफलता इससे आशातीत
चार दिन की जिंदगी कह लो मीठे बोल
न रहेगी माया काया न रहेगा अपना ये चोल
न किसी से बैर रख न किसी से द्वेष
रहो मिलकर सभी आपस में
करो चहुमुंखी सफलता की और प्रवेश

मोहम्मद हुसैन हाटपिपलीयवाला